Date
21/04/2020

Subject – शान्ति शिक्षा एवं सतत् विकास

D.El.Ed. 4th sem

हिंसा के मोर्चे

समाज की वे संस्थाएँ अथवा वर्ग अथवा स्थितियाँ अथवा समस्याएँ जो हिंसात्मक गतिविधियों को जन्म देती है और हिंसा करने के लिए लोगों को प्रेरित करती है, हिंसा के मोर्चे कहलाती है। हिंसा के प्रमुख मोर्चे निम्न प्रकार है –

(1) जाति (2) लिंग (3) भेदभाव (4) भ्रष्टाचार
(5) साम्प्रदायिकता (6) विज्ञापन (7) गरीबी

जाति – (Caste)

जाति का अर्थ एवं परिभाषा :- जाति शब्द अंग्रेजी भाषा के 'cast' का हिन्दी अनुवाद है। इस (Caste) शब्द की उत्पत्ति 'Casta' शब्द से हुई है जिसका अर्थ मत, विभेद तथा जाति से लिया जाता है। विभिन्न विद्वानो ने जाति को परिभाषित करने का प्रयास किया है –

(1) मजूमदार एवं मदान के अनुसार "जाति एक बन्द वर्ग है।"

(2) सी० कूले के अनुसार – "जब एक वर्ग पूर्वतः आनुवंशीकता पर आधारित हो तो हम उसे जाति कहते है।"

P.T.O

Scanned with CamScanner

* जाति की विशेषताएँ :-

(1) सामाजिक संस्तरण :- समाज मे सभी जातियो की स्थिति समान नही होती, वरन ऊँच - नीच का एक उतार - चढाव पाया जाता है।

(2) समाज का खण्डात्मक विभाजन :- सभी जातियां विभिन्न खण्डो मे विभाजित होती है। जिसके अन्तर्गत व्यक्ति की निष्ठा व श्रद्धा समुदाय के प्रति न होकर अपनी जाति के प्रति होती है।

(3) नागरिक एवं धार्मिक निर्योग्यताएँ एवं विशेषाधिकार :- जाति व्यवस्था मे उच्च जातियो को कई सामाजिक व धार्मिक विशेषाधिकार प्राप्त है जबकि निम्न एवं अछूत जातियो को उनसे वंचित रखा गया है।

(4) जीवन व्यतीत करने के विशेष नियम :- प्रत्येक जाति के जीवन व्यतीत करने के विषय मे कुछ विशेष नियम है जिनके द्वारा वह अपने जीवन के कार्यकलापो का सम्पादन करते है।

(5) विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध :- प्रत्येक जाति अपनी ही जाति या उपजाति मे विवाह करती है।

(6) जन्मजात सदस्यता :- जाति की सदस्यता जन्मजात होती है। शिक्षा, धर्म, व्यवसाय तथा गुणो मे वृद्धि से जाति परिवर्तित नही की जा सकती है।

(7) व्यवसाय के अप्रतिबन्धित चुनाव का अभाव :- प्रत्येक जाति का एक परम्परागत व्यवसाय होता है जो पीढी दर पीढी हस्तानतरित होता रहता है।

(8) जाति का राजनीतिक स्वरूप :- जाति एक राजनीतिक इकाई है जो अपने स्वंय के आदेशो व नियम प्रतिपादित करती है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

जाति मे परिवर्तन लाने वाले कारक :-

वर्तमान जाति मे अनेक परिवर्तन हुए है जिसके कारण उसका परम्परागत स्वरूप विघटित हो रहा है। जाति के बदलते स्वरूप के निम्न कारण है —

(1) लोकतन्त्र की स्थापना

(2) नवीन अर्थव्यवस्था मे धन का बढता महत्त्व

(3) नवीन कानूनो का प्रभाव

(4) यातायात एवं संचार साधनों में उन्नति

(5) औद्योगीकरण एवं नगरीकरण

(6) स्त्री शिक्षा का प्रसार

(7) पाश्चात्य शिक्षा एवं सभ्यता

(8) जाति पचांयतो ह्रास

(9) सयुंक्त परिवारों का विघटन

(10) जजमानी प्रथा की समाप्ति

Complete

Nidhi Tyagi
21/04/2020

Scanned with CamScanner